

## "ज्ञानेंद्रपति की कविताओं में वर्तमान परिप्रेक्ष्य"

डॉ. सुलक्षणा जाधव-घूमरे \* & प्रशांत भगवान निकाळजे.\*\*

**Author Affiliation:**

\* शोध-निर्देशक, देवगिरी महाविद्यालय छ. संभाजीनगर. ई-मेल आयडी- charvi.ghumre@gmail.com

\*\* शोध-कर्ता, देवगिरी महाविद्यालय छ. संभाजीनगर. ई-मेल आयडी- prashantbnikalje@gmail.com

**Citation of Article:** जाधव (घूमरे), एस., & निकाळजे, पी. बी. (2025). "ज्ञानेंद्रपति की कविताओं में वर्तमान परिप्रेक्ष्य". International Journal of Classified Research Techniques & Advances (IJCRTA) ISSN: 2583- 1801, 5 (2), pg. 37-41. ijcerta.org

**DOI:** [10.5281/zenodo.15781271](https://doi.org/10.5281/zenodo.15781271)

**सार:**

ज्ञानेंद्रपति प्रतिभा संपन्न कवी तथा समकालीन रचनाकार है। ज्ञानेंद्रपति के काव्य में प्रेम जीवन संघर्ष, वैचारिक एवं सांस्कृतिक पक्ष धरता नजर आती है जिसमें वे हर एक घटना, स्थिति और व्यक्ति को इस समय के नजरीए से देखते समझते हैं। कवि अपने भीतर परिवर्तन की ऊर्जा और उत्साह समेटे हुए हैं। यह परिवर्तन रचनाकार आसपास के परिवेश और परिस्थितियों से ग्रहण करते हैं। ज्ञानेंद्रपति की कविताएं मानव को मानव से जोड़ने का काम करती है कई मानव भविष्य को लेकर चिंतित नजर तो आते हैं, लेकिन वह भविष्य सुधारने की बात भी करते हैं। ज्ञानेंद्रपति वर्तमान के प्रति सजग नजर आते हैं। कवि बाजारवाद, प्रकृति चित्रण, पर्यावरण, आधुनिकता और मानव भविष्य आदि विषय लेकर काव्य सृजन करते हैं। ज्ञानेंद्रपति की दृष्टि भूमंडलीकरण पर भी पड़ी नजर आती है। ज्ञानेंद्रपति के काव्य संग्रह से गुजरने के बाद उनकी भाषा और काव्य शैली को सामान्य जान भी बड़ी आसानी से समझ पाते हैं।

गंगा तट से लेकर गंगा बीती तक के संग्रह में वह भारत के विविध क्षेत्र को प्रदर्शित करते हैं। वह भारत की राजनीति भ्रष्टाचार तथा संस्कृति के उन पहलुओं को खोलते हैं जिस पर बहुत कम लोगों ने लिखा होगा। आज का भारत आज का युवा आज की बेरोजगारी तथा आज का वर्ग भेद ज्ञानेंद्रपति अपने जीवन अनुभव के साथ प्रदर्शित करते हैं। ज्ञानेंद्रपति देश के प्रति समर्पित भाव रखते हैं। अतः ज्येष्ठ एवं श्रेष्ठ कवि साबित होते हैं।

**प्रस्तावना:**

आधुनिक हिंदी कविता की एक विशेष परंपरा रही है भारतेंदु युग से लेकर समकालीन कविता तक अनेक कवियों ने भारत में अपनी साहित्य कला को प्रदर्शित किया। साहित्य और भाषा की दृष्टि से भारत एक संपन्न राष्ट्र माना जाता है। राष्ट्रीय चेतना से हरा भरा साहित्य यहां के अनेक विद्वान, लेखक, कवि आदि लिखते आए हैं। बल्कि लिख रहे हैं विश्व की वर्तमान स्थिति आज के साहित्यकारों का विषय बना हुआ है। आज कई राष्ट्रों में पर्यावरण की समस्या बनी हुई है। देश विदेश में युवाओं के बेरोजगारी पर आवाज उठाई जा रही है। इस बीच झारखंड के एक गांव पथरगामा से कवि ज्ञानेंद्रपति अपनी बात कहते हैं, साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त एक श्रेष्ठ कवि भारत की इन सभी समस्याओं को अपने ढंग से प्रस्तुत करते हैं। वह समस्त भूमंडलीकरण को अपने काव्य से उजागर करते हैं। वर्तमान की हर एक बात पर भूत

और भविष्य से जोड़कर सच्चाई को प्रकट करने का प्रयास करते हैं। देश का बदलता रूप और उसके प्रति हमारा कर्तव्य इस विषय पर वे लिखते हैं। कवि वर्तमान से जुड़ी समस्याओं से पाठकों का परिचय करवाना चाहते हैं। विश्व की बात की जाए तो आज का तंत्रज्ञान मानव के हित में दिखाई देता है। औजार और उपकरणों का अध्ययन एवं इस्तेमाल सही ढंग से हो रहा है, किंतु मानव स्वभाव इसका गलत तरीके से उपयोग करता नजर आता है। जहां विज्ञान और अन्य सभी क्षेत्रों में तंत्रज्ञान अहम भूमिका निभाते नजर आता है, वहीं दूसरी ओर प्रदूषण, तकनीकी बेरोजगारी और संसाधनों की कमी इन समस्याओं से भी तंत्रज्ञान पीड़ित नजर आता है। ज्ञानेंद्रपति उपकरणों के कायाबल और विज्ञापनों के मायाबल की बात करते हैं। वे देश की इस आजादी पर व्यंग्य करते नजर आते हैं। आजादी का दूसरा नाम आज गुलामी है। दुनिया भर के लोग आज इस माया और काया में फस रहे हैं। ज्ञानेंद्रपति अपनी कविता 'आजादी उर्फ गुलामी' से कहते हैं -

"आजादी के गोल्डन जुबली साल में  
आजादी का मतलब है  
बाजार से अपनी पसंद की चीज चुनने की आजादी  
और आपकी पसंद  
वे तय करते हैं  
जिनके पास उपकरणों का कायाबल  
विज्ञापनों का मायाबाल  
आपके आजादी पसंद है उन्हें  
चीजों का गुलाम बनने की आजादी"<sup>1</sup>

वर्तमान परिप्रेक्ष्य का भारत और भारत के सभी क्षेत्र की समस्याओं को पाठकों के सामने रखने का एक सफल प्रयास ज्ञानेंद्रपति करते हैं। वह आज के समाज मन पर हो रहे मुक्त व्यापार तथा तकनीकी के तीव्र विकास के परिणाम कविताओं के माध्यम से चित्रित करते हैं। व्यापार और वाणिज्य केवल वस्तुओं का आदान-प्रदान ही नहीं करते बल्कि संस्कृति का भी आदान-प्रदान करते हैं। वैश्विक संस्कृति का रूपायन होता है, धर्म, संस्कार, कुल, अर्थ, भाषा और चिन्ह आदि से। इसका असर कहीं ना कहीं समाज पर होता जाता है। मुक्त व्यापार से वस्तुओं का आदान-प्रदान तो होता ही है, किंतु 'देह-व्यापार' का भी खुलेआम व्यापार होता नजर आता है। इसका और सीमित दायरा आज की विकृत संस्कृति बनती जा रही है। ज्ञानेंद्रपति अपनी 'इंतजार' कविता के माध्यम से वेश्यावृति तथा देह-व्यापार के संस्कृति को बढ़ावा और सामाजिक अवहेलना को पाठकों के सामने रखते हैं -

"कोलकाता  
कर्जन पार्क  
दिन के चार बजे  
घुटने मोड़ कर बैठी हुई यह लड़की  
दिन को अपने पैरों तले ऐ जाने के इंतजार में  
उनके सपाट चेहरे पर जल उठेगी उसकी आंखें  
आ जाएगी उनमें वह चमक जो केवल  
बुरी स्नियों में होती है"<sup>2</sup>

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देखा जाए तो संस्कृति का आदान-प्रदान कई मायने विकृति की और ले जाता हुआ नजर आता है। व्यभिचार को बढ़ावा देने के लिए देह-व्यापार की खुले आम नीलामी हो रही है। आज वर्तमान युग की गतिविधियों में देह-व्यापार पर ज्ञानेंद्रपति लिखते हैं। वे 'थाइलैंड और कंचनजंघा' कविता के माध्यम से कहते हैं -

“थाइलैंड की जांधें  
पके फोड़ों की तरह पिराती है अधरात  
सभ्यता की भोग शय्या पर रोग—विहवल  
सभ्यता के सीमान्त के सिरहाने  
सुबह—शाम सोने की हो उठती है कंचनजंघा  
श्रांत मानवात्मा के शीश टीका पल दो पल सुस्ताने—सोने  
पुनर्नव होने के लिए”<sup>3</sup>

ज्ञानेंद्रपति भारत की कला संस्कृति और परंपरा के लुप्त होने की चिंता व्यक्त करते हैं मनुष्य का काम आज मशीन कर रही है। इसी बात पर ज्ञानेंद्रपति के बारे में करुणा शंकर उपाध्याय कहते हैं — “कवि जिस संजीदगी से वैश्विक माध्यमों, उपग्रह, चैनलों, कंप्यूटर संजालों, फिल्मों तथा दूरदर्शन के मोहक कार्यक्रमों के चलते परंपरागत कलाओं एवं कलाकारों पर आसन्न संकट को महसूसता है वह काबिलेगौर है।”<sup>4</sup> ज्ञानेंद्रपति, ‘जब और अब’ कविता में दो युगों के अंतर्विरोध को खोलकर सामने रखते हैं, वे कहते हैं —

"जब सर्कस भर रही थे शहर के शोर पर  
उनके तंबू तोप नहीं पा रहे थे कलाबाजियों की उदासी  
सिनेमा हॉल फिल्मी धुन गुनगुना रहे थे मदमस्त  
पाले पत्तों की तरह झड़ते और उड़ते पोस्टर वाले  
अब जब वे सड़क के किनारे दम तोड़ रहे हैं  
लोगों के ड्राइंग रूम से कैसेटों और कह-कहो की आवाज आ रही है।"<sup>5</sup>

ज्ञानेंद्रपति भूमंडलीकरण की बात करते हैं। अर्थ, राजनीति, पर्यावरण, धर्म आदि क्षेत्र के माध्यम से वे वर्तमान की स्थिति को काव्य के रूप में प्रकट करते हैं। आर्थिक गतिविधियों की बात करें तो इसके भीतर उदारीकरण, निजीकरण, अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थाएं, सुरक्षावाद, पूँजी का बदलता प्रवाह आदि को ज्ञानेंद्रपति ने यथार्थ रूप से प्रकट किया है। उदारीकरण पर ज्ञानेंद्रपति अपनी कविता ‘आदमी को प्यास लगती है’ मैं समझते हैं, कि भारतीय मनुष्य और उसका श्रम विश्व बाजार में किस प्रकार से सस्ता हुआ है। उदारीकरण की प्रक्रिया ने उसे कैसे मजबूर कर दिया है कई वर्णन करते हैं —

"वह बहुराष्ट्रीय कंपनियों के उत्पादन नहीं है।  
भारतीय मनुष्य के उत्पाद हैं  
वे भारतीय मनुष्य हैं-अपने हो भाई-बन्द  
भारतीय मनुष्य-जिसका श्रम सस्ता हैं  
विश्व बाजार की भूमि आँख  
जिनकी जेब पर ही नहीं  
जिगर पर भी गड़ी है”<sup>6</sup>

भारत देश में अनेक समस्याएं भरी पड़ी हैं। इन समस्याओं में एक सबसे बड़ी समस्या आज पर्यावरण है। ज्ञानेंद्रपति प्रकृति के प्रदूषित होने की बात करते हैं। उसी के साथ पर्यावरण का महत्वपूर्ण घटक पानी और पानी का मूल रूप आज बदलता नजर आ रहा है। नदी मैली हो गई है उसका रूपांतर नालों में हो रहा है। एक साबुन की टिकिया से तुलना कर, कवि नदी की दशा और दिशा बताना चाहते हैं। रवि एम. कहते हैं, "साबुन की टिकिया औद्योगिक पूंजीवाद की बिटिया है।"<sup>7</sup> उनकी कविता नदी और साबुन (एक) में आज के नदी का यथार्थ रूप वे प्रकट करते हैं –

" नदी

तू इतनी दुबली क्यों है  
 और मैली-कुचली  
 मरी हुई इच्छाओं की तरह मछलियों को उतराई हैं  
 तुम्हारे दर दिनों के दुर्जल में  
 किसने तुम्हारा निर हरा  
 कलकल में कलुष भरा  
 बाधों के जूठराने से तो  
 कभी दूषित नहीं हुआ तुम्हारा जल  
 ना कछुआ की दृढ़ पीठों से उलीचा जाकर भी कम हुआ  
 हाथियों की जल-क्रीड़ाओं को भी तुम सहती रही सानंद  
 आह, लेकिन  
 स्वार्थी कारखानों का तेजाबी पेशाब झेलते  
 बैंगनी हो गई तुम्हारी शुभ्र त्वचा  
 हिमालय के होते हुए भी तुम्हारे सिरहाने  
 हथेली भर की एक साबुन की टिकिया से  
 हार गई तुम युद्ध ॥"<sup>8</sup>

भूमंडलीकरण को अधूरेखित करते समय ज्ञानेंद्रपति पूंजी के बदलते प्रवाह को प्रकट करते हैं। कई वस्तुओं का आकार तथा उनकी गति के बारे में तो बात करते ही है, बल्कि बदलते पूंजी को भी प्रदर्शित करते हैं। ज्ञानेंद्रपति अपनी कविता 'विदा, भाप-इंजन' के माध्यम से पूंजी के बदलते प्रवाह को स्पष्ट करते हुए कहते हैं –

"दुनिया के प्लेटफार्म पर  
 खड़ा है भाप-इंजन  
 विदा लेता हुआ  
 उसका काला-कलुटा तन  
 हिचकीयों के हिचकोले में झुलता-सा  
 आ गए हैं रंग-बिरंगे नए इंजन नवयुगी  
 डीजल के, बिजली के  
 गति की प्रगति युग-सत्य" <sup>9</sup>

**निष्कर्ष: -**

निष्कर्ष रूप से हम देखते हैं कि, ज्ञानेद्रपति समकालीन कवि है। वे सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीति एवं पर्यावरण की समस्याओं पर लिखते हैं। वर्तमान समय के भारत का यथार्थ चित्रण ज्ञानेद्रपति की काव्य की विशेषता है। विषय चयन उनके अनुभूति पर निर्भर करता है। भारत भ्रमण कर उन्होंने देश का एक अलग चित्र पाठकों के सामने रखा है। वन्य प्राणियों से लेकर अंतर्राष्ट्रीय व्यापार तक के विषय उनके काव्य में सम्मिलित है। कवि देश की संस्कृति एवं राष्ट्र संपत्ति की और पाठकों का ध्यान आकर्षित करते हैं। गांव से लेकर बड़े शहरों तक का सफर उनके काव्य का विषय बन चुके हैं। अपने पारिवारिक परिवेश से उन्होंने जो पाया है, वही उनके कवि बनने की प्रथम सीढ़ी है। ज्ञानेद्रपति स्वयं कहते हैं, "कविता के संस्कार प्रथमतः तो कवि अपने परिवार व तत्कालीन सामाजिक परिवेश से ग्रहण करता है। अध्ययन - क्रम में इस पर अगली परते चढ़ती जाती है।"

ज्ञानेद्रपति वर्तमान समय के एक मुक्त कवि है, जिन्होंने मानवता को महत्व देकर निष्पक्ष काव्य सूजन किया। अतः वह अनेक सम्मान एवं पुरस्कार के पात्र है।

**संदर्भ सूची:**

1. ज्ञानेद्रपति, संशयात्मा, पृ. क्र. १२३
2. ज्ञानेद्रपति, मनु को बनाती मनई, पृ. क्र. १३२
3. ज्ञानेद्रपति, संशयात्मा, पृ. क्र. १३३
4. करुणा शंकर उपाध्याय, आधुनिक कविता का पुर्णपाठ, पृ. क्र. २५५
5. ज्ञानेद्रपति, संशयात्मा, पृ. क्र. ४३
6. ज्ञानेद्रपति, कवि ने कहा (असंकलित), पृ. क्र. १०५
7. <https://chiragkan1.blogspot.com/2012/or/blog-postlog.huml?m=1>
8. ज्ञानेद्रपति, गंगातट, पृ. क्र. २०
9. ज्ञानेद्रपति, संशयात्मा, पृ. क्र. १७४
10. ज्ञानेद्रपति, पढ़ते-गढ़ते, पृ. क्र. ११९

**IJCRTA**